International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)
E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

मलिक मोहम्मद जायसी के काव्य में अलौकिक प्रेम एवं रहस्यवाद

डॉ. वंदना

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी,
राजकीय महिला महाविद्यालय बदायूं

मध्यकालीन भारतीय साहित्य में मलिक मोहम्मद जायसी एक ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र की भाँति उभरे जिन्होंने अपनी लेखनी से न केवल हिंदी सूफी काव्य परंपरा को पूर्णता प्रदान की बल्कि भारतीय और इस्लामी संस्कृतियों के बीच एक अटूट भावनात्मक और आध्यात्मिक सेतु का निर्माण भी किया। जायसी निर्गुण भक्ति धारा की प्रेमाश्रयी शाखा के सबसे प्रमुख और प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनका उदय एक ऐसी ऐतिहासिक अनिवार्यता के काल में हुआ जब भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन के पश्चात हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच सांस्कृतिक संघर्ष और समन्वय की प्रक्रिया अपने निर्णायक चरण में थी । जायसी ने अपनी काव्य साधना के माध्यम से यह कालजयी संदेश प्रसारित किया कि प्रेम एक ऐसी सार्वभौमिक और दिव्य शक्ति है जो धर्म, संप्रदाय, भाषा और जाति की समस्त संकीर्ण सीमाओं को लांघकर जीवात्मा को परमात्मा से एकाकार करने की सामर्थ्य रखती है। उनका काव्य केवल मानवीय अनुराग की गाथा मात्र नहीं है। यह एक जटिल और गंभीर आध्यात्मिक साधना का जीवंत दस्तावेज है जिसमें लौकिक प्रेम की सीढ़ियों के माध्यम से अलौकिक सत्य के साक्षात्कार का मार्ग अत्यंत सुगमता से प्रशस्त किया गया है ।

जायसी के व्यक्तित्व और उनके विस्तृत रचना-संसार को पूर्णतः समझने के लिए उस युग की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का गहन विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है। यद्यपि मध्यकालीन कवियों के जीवन के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों का अभाव रहता है किंतु उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर जायसी का जन्म संभवतः 1464 ईस्वी (870 हिजरी) के आसपास स्वीकार किया जाता है और वे उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस नामक नगर के मूल निवासी थे जिसके कारण उनके नाम के साथ 'जायसी' शब्द जुड़ गया । उनका जीवन आरंभ से ही संघर्षों, वियोग और विरक्ति से परिपूर्ण रहा था अल्पायु में ही माता-पिता का साया सिर से उठ जाने और शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि से उस परम सत्य का दर्शन कर लिया था जिसे सामान्य चक्षु वाले देख पाने में असमर्थ होते हैं । जायसी के बारे में साहित्य जगत में यह प्रसंग अत्यंत प्रसिद्ध है कि वे एक आंख से अंधे और एक कान से बहरे थे साथ ही उनके चेहरे पर चेचक के गहरे दाग थे। कहा जाता है कि जब तत्कालीन शासक शेरशाह सूरी ने उन्हें देखा और उनकी कुरूपता पर हँसने लगा तो जायसी ने अत्यंत विनीत भाव से किंतु प्रभावशाली ढंग से प्रश्न किया कि वह मुझ पर हँस रहा है या उस कुम्हार (ईश्वर) पर जिसने मुझे गढ़ा है । यह घटना उनके अटूट आत्मविश्वास और ईश्वर की रचनात्मकता के प्रति उनके अनन्य समर्पण को रेखांकित करती है।

जायसी की काव्य साधना उस समय विकसित और परिपक्व हुई जब भारत में सूफी संतों और उनकी खानकाहों का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा था। उन्होंने अपने जीवन का एक लंबा अंतराल सूफी संतों के सान्निध्य और मार्गदर्शन में व्यतीत किया जहाँ उन्होंने 'इश्क' के माध्यम से खुदा की प्राप्ति के गुह्य मार्गों को आत्मसात किया। उनकी प्रमुख कृतियों में 'पद्मावत', 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिनमें से 'पद्मावत' को विश्व साहित्य की एक उत्कृष्ट आध्यात्मिक कृति के रूप में मान्यता प्राप्त है । जायसी ने सांस्कृतिक समन्वय की ठोस आधारशिला रखी तथा 'प्रेम' के अत्यंत कोमल, सरस और भावनात्मक मार्ग का चयन किया जो भारतीय जनमानस के हृदय में अधिक गहराई और सहजता के साथ पैठ बनाने में सफल रहा । उनके काव्य की महानता इसी तथ्य में निहित है कि उन्होंने स्थानीय

लोक-कथाओं और ग्रामीण प्रतीकों के माध्यम से अत्यंत कठिन दार्शनिक सिद्धांतों को जनसुलभ और हृदयस्पर्शी बना दिया।

जायसी के काव्य की दार्शनिक नींव सूफी तसव्वुफ और भारतीय अद्वैतवाद के एक अनूठे और सरस मेल पर आधारित है। सूफी मत का मूल आधार 'इश्क' (प्रेम) की वह धारा है जहाँ ईश्वर को 'माशूक' (प्रेयसी) और भक्त को 'आशिक' (प्रेमी) के रूप में कल्पित किया जाता है। जायसी ने इस विदेशी दार्शनिक ढांचे को भारतीय परिवेश और यहाँ की मिट्टी में इस प्रकार विलीन किया कि वह पूर्णतः भारतीय रंग में रंगा हुआ प्रतीत होने लगा । उनके रहस्यवाद में अद्वैतवाद की जो स्पष्ट झलक मिलती है उसे उन्होंने भारतीय और प्राचीन यूनानी विचारकों के दर्शन से ग्रहण किया और उसे इस्लामी पैगंबरीय परंपराओं के साथ एकसूत्र में पिरोया । भारतीय अद्वैतवाद जहाँ मुख्य रूप से शुष्क ज्ञान और बौद्धिक विमर्श का विषय रहा था वहीं जायसी और अन्य सूफी कवियों ने इसे 'भाव' और 'हृदय' के धरातल पर प्रतिष्ठित करके एक मधुर आध्यात्मिक अनुभूति में परिवर्तित कर दिया ।

जायसी के दार्शनिक चिंतन के अनुसार यह दृश्यमान जगत उस परम सत्ता का ही एक प्रतिबिंब मात्र है। वे सर्ववाद के प्रबल अनुयायी थे, जो 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के उस विचार को पुष्ट करता है जहाँ सृष्टि का कण-कण ईश्वर का ही विस्तार माना जाता है । उनके काव्य में प्रकृति की हर हलचल उस दिव्य सौंदर्य का एक स्पष्ट दर्पण है। जायसी का रहस्यवाद मुख्य रूप से दो स्तरों पर सक्रिय रहता है: पहला आत्मा और परमात्मा की पूर्ण एकता (आत्म-परमात्म) और दूसरा ब्रह्म एवं संपूर्ण जगत की अभिन्नता (ब्रह्म-जगत) । यह दार्शनिक संश्लेषण ही उनके काव्य को 'रहस्यवादी' की श्रेणी में खड़ा करता है, जहाँ एक साधारण मानवीय प्रेम कहानी के अंतस में एक गहरा आध्यात्मिक सत्य निरंतर प्रवाहित होता रहता है। उन्होंने हृदय के भीतर स्थित उस "अदृश्य महल" में मिलन की परिकल्पना की है, जहाँ साधक एक वधू के रूप में अपने परम प्रियतम परमात्मा की प्रतीक्षा में रत रहता है ।

जायसी की विचारधारा में अद्वैतवाद केवल एक शुष्क दार्शनिक सिद्धांत नहीं है बल्कि वह एक जीवंत भावनात्मक अनुभव है। उनका दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर प्रत्येक जीव के भीतर ही अत्यंत सूक्ष्म रूप में निवास करता है और वह कहीं बाहर खोजने का विषय नहीं है । इस उदार विचारधारा ने उन्हें हिंदू और मुस्लिम दर्शन के बीच की दुर्गम दीवारों को गिराने में अभूतपूर्व सहायता प्रदान की। सूफी साधना के जो चार प्रमुख चरण होते हैं—शरियत (धार्मिक विधानों का पालन), तरीकत (साधना का मार्ग), मारिफत (आध्यात्मिक बोध) और हकीकत (सत्य का साक्षात्कार)—जायसी के काव्य में वे प्रतीकात्मक रूप से रचे-बसे हैं । वे इन चरणों के माध्यम से साधक को शनैः-शनैः सांसारिक मोह-माया के जाल से ऊपर उठाकर परमात्मा की परम निकटता और एकात्मकता की ओर ले जाते हैं। जहाँ ईश्वर के प्रति किसी प्रकार के भय के स्थान पर अनुराग, समर्पण और माधुर्य की प्रधानता सर्वोपरि है ।

जायसी के संपूर्ण काव्य संसार में प्रेम के दो स्वरूप स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं: लौकिक प्रेम (इश्क-ए-मिजाजी) और अलौकिक प्रेम (इश्क-ए-हकीकी)। उनके अमर महाकाव्य 'पद्मावत' में राजा रत्नसेन और रानी पद्मावती की जो प्रेम कथा वर्णित है, वह बाह्य रूप से तो एक मानवीय प्रणय गाथा जैसी प्रतीत होती है, किंतु जब हम इसकी दार्शनिक गहराई में प्रवेश करते हैं, तो यह जीवात्मा की परमात्मा की ओर की गई एक अत्यंत कठिन और दुर्गम आध्यात्मिक यात्रा का रूपक बनकर प्रकट होती है । जायसी ने प्रेम को केवल एक सामान्य मानवीय संवेदना नहीं बल्कि एक उच्चतम 'साधना' के रूप में परिभाषित किया है। रत्नसेन का अपने राज्य चित्तौड़ को त्यागकर सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान करना और मार्ग में आने वाली अनेक भयंकर बाधाओं को साहसपूर्वक पार करके पद्मावती को प्राप्त करना, वस्तुतः साधक का इस नश्वर संसार से विरक्त होकर ईश्वरीय सत्य की प्राप्ति हेतु किया गया संघर्ष है ।

'पद्मावत' की गहन प्रतीकात्मकता इस अलौकिक प्रेम के स्वरूप को और अधिक सुस्पष्ट कर देती है। इस रूपक में पद्मावती 'ब्रह्म' या 'परमात्मा' की प्रतीक हैं, जो संसार के समस्त सौंदर्य और पूर्णता की अंतिम परिणति हैं । वहीं राजा रत्नसेन उस 'साधक' या 'जीवात्मा' का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो केवल ईश्वरीय सौंदर्य की चर्चा मात्र सुनकर उसे प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा में व्याकुल हो उठता है । रत्नसेन की यह व्याकुलता कोई साधारण दैहिक वासना नहीं है,

International Journal of Technology and Applied Science (IJTAS)
E-ISSN: 2230-9004 ● Website: www.ijtas.com ● Email: editor@ijtas.com

बल्कि यह उस शाश्वत आत्मा की वह प्यास है जो केवल ईश्वर के साथ एकाकार होने पर ही शांत हो सकती है। जायसी ने इस प्रेम को 'अलौकिक' की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि इसमें प्रेमी अपने व्यक्तिगत अस्तित्व और अहंकार को पूरी तरह मिटाकर अपने प्रियतम में विलीन हो जाना चाहता है । जब रत्नसेन पहली बार पद्मावती के अलौकिक सौंदर्य का दर्शन करते हैं, तो वे मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं; सूफी दर्शन में यह मूर्छा 'हाल' या 'फना' की वह आध्यात्मिक अवस्था है जहाँ साधक का स्व विलीन हो जाता है और वह केवल उस दिव्य प्रकाश का अनुभव करता है ।

जायसी के इस अलौकिक प्रेम की एक अन्य महान विशेषता यह है कि यह लौकिक और दृश्यमान सौंदर्य के माध्यम ही स्वयं को अभिव्यक्त करता है। वे पद्मावती के सौंदर्य का वर्णन करते समय उसे एक ऐसे दिव्य और प्रखर प्रकाश के रूप में चित्रित करते हैं जिसके सामने सूर्य और चंद्रमा की चमक भी फीकी पड़ जाती है। जायसी के काव्य में जब पद्मावती हँसती हैं तो प्रकृति में फूलों की वर्षा होने लगती है और उनके अश्रु मोतियों की आभा ग्रहण कर लेते हैं । यह वर्णन इस गहरे दार्शनिक विचार की पुष्टि करता है कि इस जगत में हम जो भी सौंदर्य देखते हैं, वह उस एक 'परम सुंदर' सत्ता की परछाई मात्र है। इस प्रकार जायसी ने पार्थिव प्रेम को अपार्थिव या दिव्य प्रेम की प्राप्ति का एक अनिवार्य साधन बनाकर मध्यकालीन प्रेम पद्धति को एक नई आध्यात्मिक ऊंचाई और गरिमा प्रदान की । उनकी समग्र दृष्टि में प्रेम ही वह एकमात्र पवित्र सूत्र है जो इस नश्वर और परिवर्तनशील संसार को उस अविनाशी और नित्य सत्ता से जोड़ सकता है।

रहस्यवाद वह सूक्ष्म आध्यात्मिक स्थिति है जहाँ मनुष्य की तार्किक बुद्धि की सीमाएं समाप्त हो जाती हैं और प्रत्यक्ष रसानुभूति का आरंभ होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जायसी के रहस्यवाद को 'भावनात्मक रहस्यवाद' के रूप में परिभाषित किया है । जायसी का मार्ग प्रेम की तीव्रता, विरह की अग्नि और पूर्ण आत्म-समर्पण पर आधारित है। हालांकि जायसी के काव्य में भी योग, तंत्र और रसायन विद्या के कतिपय तत्व दृष्टिगोचर होते हैं किंतु वे उनके काव्य में प्रेम की पावन अग्नि में तपकर पूर्णतः आध्यात्मिक रूप धारण कर लेते हैं। जायसी का संपूर्ण रहस्यवाद उस 'परम सौंदर्य' के प्रति असीम विस्मय और गहरे अनुराग का परिणाम है। वे प्रकृति में होने वाले प्रत्येक रहस्यमय परिवर्तन में ईश्वरीय प्रेम का ही संकेत पाते हैं। उनके दर्शन में आकाश, वायु, अग्नि और जल—ये समस्त तत्व उस 'अमरधाम' या दिव्य निवास तक पहुँचने के लिए निरंतर संघर्षरत दिखाई देते हैं । वे अग्नि को जलते हुए, धुएं को आकाश की ओर ऊपर उठते हुए और जल को निरंतर बहते हुए देखकर यह दार्शनिक निष्कर्ष निकालते हैं कि ये सभी तत्व उस दिव्य सत्ता से मिलन की 'साधना' में लगे हुए हैं किंतु उनकी यह साधना अक्सर अधूरी रह जाती है क्योंकि उनमें वह पूर्ण और अनन्य समर्पण नहीं है जो एक विरही प्रेमी के हृदय में होता है । जायसी की दृष्टि मूलतः 'रहस्यदर्शी' है वे प्रकृति की साधारण सी दिखने वाली घटनाओं में भी गूढ़ आध्यात्मिक अर्थों का अन्वेषण कर लेते हैं। उदाहरण के तौर पर, वे सूर्योदय के समय आकाश में छाने वाली लालिमा को ईश्वरीय 'अनुराग' का वह रंग मानते हैं, जो समस्त विश्व को प्रेम के रंग में सराबोर कर देता है ।

जायसी के रहस्यवाद में 'सात समुद्रों' की प्रतीकात्मक यात्रा का वर्णन अत्यंत महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक अर्थों से भरा हुआ है। ये सात समुद्र—खारा, खीर, दधि, उद्धि, सुर, स्वाद और अंततः मानसरोवर साधक के अंतर्मन की उन सात विशिष्ट अवस्थाओं को दर्शाते हैं जिनसे सफलतापूर्वक गुजरकर वह शुद्ध ज्ञान और ईश्वर के वास्तविक साक्षात्कार (मानसरोवर) तक पहुँचने में सफल होता है । जायसी ने इन गहन आध्यात्मिक अनुभवों को अत्यंत सजीव रसमय और प्रवाहमयी शैली में प्रस्तुत किया है। वे मानसरोवर का चित्रण एक ऐसी परम स्थिति के रूप में करते हैं जहाँ आत्मा के समस्त सांसारिक संशय और द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं और वह परमात्मा के दिव्य प्रतिबिंब को अपने स्वयं के भीतर ही देख पाने में सक्षम हो जाती है । इस प्रकार जायसी का रहस्यवाद केवल शुष्क दार्शनिक विवेचन की वस्तु न रहकर एक उत्कृष्ट और उच्च कोटि का काव्य बन गया है जो पाठक के मन को भी उस आध्यात्मिक परमानंद की ओर ले जाने की सामर्थ्य रखता है।

जायसी के काव्य दर्शन में विरह को प्रेम की वास्तविक कसौटी और आध्यात्मिक शुद्धि का अनिवार्य अंग माना गया है। सूफी साधना की दृष्टि में विरह वह अत्यंत पावन अग्नि है जो साधक के अंतर्मन के समस्त विकारों, वासनाओं और

अहंकार को जलाकर उसे शुद्ध स्वर्ण के समान कुंदन बना देती है । जायसी का यह अटूट विश्वास है कि विरह के बिना प्रेम में वह गहराई, गंभीरता और पवित्रता कभी नहीं आ सकती जो ईश्वर की प्राप्ति के लिए परम आवश्यक है। उनके महाकाव्य 'पद्मावत' में विरह का जो सबसे अधिक मर्मस्पर्शी, स्वाभाविक और उत्कृष्ट रूप प्रकट हुआ है, वह 'नागमती विरह वर्णन' है, जिसे हिंदी साहित्य की एक ऐसी अनुपम निधि स्वीकार किया गया है जिसकी तुलना विरली ही कहीं मिलती है ।

नागमती राजा रत्नसेन की प्रथम पत्नी हैं, जो उनके सिंहलद्वीप चले जाने के पश्चात वियोग की अत्यंत दारुण अग्नि में निरंतर जलती रहती हैं। जायसी ने नागमती के इस विरह का चित्रण 'बारहमासा' की लोक-शैली के माध्यम से किया है, जहाँ भारतीय प्रकृति के प्रत्येक महीने के बदलते परिवेश और ऋतुओं के साथ विरहिणी की आंतरिक पीड़ा का एक अत्यंत गहरा और सूक्ष्म तालमेल बिठाया गया है । यद्यपि नागमती का विरह ऊपरी तौर पर सांसारिक और लौकिक प्रतीत होता है, किंतु जायसी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से उसे एक व्यापक आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक अर्थ भी प्रदान किया है। नागमती यहाँ 'सामान्य जीव' या उस 'सांसारिक बुद्धि' की प्रतीक बनकर उभरती हैं जो अपने मूल आध्यात्मिक आधार के बिछोह में तड़प रही है । उनके विरह में वह सात्विकता, निश्छलता और लोक-मर्यादा निहित है जो उसे साधारण मानवीय स्तर से कहीं ऊपर उठाकर एक दैवीय ऊंचाई प्रदान कर देती है।

नागमती के विरह की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें संसार की वे समस्त वस्तुएं, जो सामान्य अवस्था में सुख और आनंद प्रदान करती हैं, वियोग की स्थिति में पीड़ा का अत्यंत तीव्र स्रोत बन जाती हैं। वह प्रकृति के मूक पशु-पक्षियों और वनस्पति से अपने प्रियतम का पता पूछती फिरती है और उनके माध्यम से अपना संदेश पहुँचाने का प्रयास करती है । जायसी अत्यंत कुशलता से लिखते हैं कि नागमती की पीड़ा इतनी अधिक सघन है कि वह स्वयं को एक अत्यंत असहाय जीव के रूप में अनुभव करती है जिसके पास न तो पंख हैं कि वह उड़कर अपने स्वामी तक पहुँच सके और न ही वह अपने घर की सामाजिक मर्यादा का परित्याग कर सकती है । हिंदी साहित्य के प्रकांड विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने नागमती के विरह को रत्नसेन और पद्मावती के विरह से कहीं अधिक प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी माना है क्योंकि इसमें एक भारतीय गृहस्थ स्त्री की स्वाभाविकता और लोक जीवन की गहरी मानवीय संवेदनाएं पूर्णतः घुली-मिली हुई हैं । यह विरह केवल एक व्यक्तिगत विलाप नहीं है अपितु यह उस संपूर्ण सृष्टि की व्याकुलता का मर्मस्पर्शी प्रतीक है जो अपने चिरंतन स्रोत से अलग होकर पुनः उसमें विलीन होने के लिए छटपटा रही है।

मलिक मोहम्मद जायसी की कालजयी कृति 'पद्मावत' केवल एक कहानी नहीं बल्कि एक महाकाव्यात्मक रूपक है जिसमें एक ऐतिहासिक और लोक-प्रचलित कथा के आवरण में शाश्वत और सार्वभौमिक आध्यात्मिक सत्यों को प्रतिपादित किया गया है। जायसी ने स्वयं इस महाकाव्य के अंत में इसके गहरे प्रतीकात्मक अर्थ की ओर स्पष्ट संकेत किया है। उनकी यह विशिष्ट काव्य शैली साहित्य में 'समासोक्ति' के नाम से विख्यात है, जहाँ वर्णित स्थूल कथा के साथ-साथ एक सूक्ष्म आध्यात्मिक अर्थ की धारा भी निरंतर और समानांतर रूप से प्रवाहित होती रहती है । ग्रंथ की संपूर्ण संरचना में प्रत्येक प्रमुख पात्र, स्थान और घटना एक विशिष्ट आध्यात्मिक सत्ता या स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है, जो पाठक को जीवात्मा की परमात्मा तक की यात्रा का प्रतीकात्मक बोध कराती है।

पद्मावत के इन प्रतीकों का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि जायसी ने मानव शरीर और मन की जटिल क्रियाओं को सूफी आध्यात्मिक साधना के विभिन्न चरणों के साथ जोड़ने का एक अभूतपूर्व प्रयास किया है। इस रूपक में चित्तौड़गढ़ को मानव के भौतिक शरीर का प्रतीक माना गया है, जो जीवात्मा का निवास स्थान है । राजा रत्नसेन स्वयं 'मन' या 'जीवात्मा' (साधक) के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जो ईश्वरीय प्रेम की पुकार या प्रेरणा सुनकर अपनी अज्ञान की निद्रा से जागृत होता है । सिंहलद्वीप उस 'हृदय' या आंतरिक आध्यात्मिक केंद्र का प्रतीक है, जहाँ दिव्य ईश्वरीय सत्ता का वास्तविक निवास माना गया है । रानी पद्मावती यहाँ सात्विक बुद्धि या स्वयं 'ब्रह्म' (परमात्मा) का प्रतीक है जो अलौकिक सौंदर्य और सत्य के चरमोत्कर्ष का रूप है ।

इस आध्यात्मिक यात्रा में हीरामन तोता एक अत्यंत महत्वपूर्ण 'गुरु' या मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है, क्योंकि वही रत्नसेन को पहली बार पद्मावती के सौंदर्य की रहस्यमयी जानकारी देता है और उसे प्राप्त करने का कठिन मार्ग प्रशस्त करता है । इसके विपरीत रानी नागमती सांसारिक मोह-माया की प्रतीक बनकर सामने आती हैं जो साधक को अपने आकर्षणों और बंधनों में जकड़कर उसे उसके आध्यात्मिक पथ से विचलित करने का निरंतर प्रयास करती हैं । जबकि अलाउद्दीन खिलजी उस 'माया' या अहंकार का प्रतीक है जो छल-कपट और बाहुबल के माध्यम से उस दिव्य सत्ता को हस्तगत करना चाहता है । इस विस्तृत प्रतीकात्मक ढांचे के माध्यम से जायसी यह गंभीर संदेश देना चाहते हैं कि आत्मा का परमात्मा से मिलन कोई सहज कार्य नहीं है इसके लिए गुरु का मार्गदर्शन, सांसारिक मोह का त्याग और माया की शक्तियों के साथ निरंतर संघर्ष अनिवार्य है। राजा रत्नसेन का बलिदान यह सिद्ध करता है कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए साधक को अपना संपूर्ण अहंकार और स्वत्व समर्पित करना पड़ता है। जायसी की अक्षय कीर्ति का मुख्य आधार 'पद्मावत' ही है तथापि उनके दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों की पूर्णता और स्पष्टता उनके अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों अखरावट और आखिरी कलाम में भी गहराई से निहित है। ये रचनाएँ पद्मावत की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से सैद्धांतिक, वर्णनात्मक और साधना-परक हैं जहाँ जायसी ने सूफी दर्शन के तकनीकी और दार्शनिक पहलुओं को विस्तारपूर्वक समझाया है।

'अखरावट' में जायसी ने देवनागरी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को आधार बनाकर सृष्टि की रहस्यमयी उत्पत्ति, जीव के वास्तविक स्वरूप और ईश्वर के साथ उसके शाश्वत संबंधों पर अत्यंत गंभीर और मौलिक विमर्श किया है। यह ग्रंथ एक प्रकार से जायसी का 'दर्शन शास्त्र' माना जा सकता है । इसमें उन्होंने अत्यंत सुंदरता से प्रतिपादित किया है कि इस सृष्टि की रचना से पूर्व केवल एक महाशून्य या 'अंधकूप' की स्थिति थी जिसमें परमात्मा ने सबसे पहले 'मुहम्मद के नूर' (दिव्य प्रकाश) को प्रकट किया और उसी मूल प्रकाश की किरणों से संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके जीवों की रचना हुई । यह विचार सूफी दर्शन के सुप्रसिद्ध 'नूर-ए-मुहम्मदी' के सिद्धांत पर आधारित है। 'अखरावट' में वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य के भीतर ही ईश्वर का वास्तविक वास है और उसे बाहर की दुनिया में खोजने के बजाय अपने अंतर्मन की गहराई में खोजना चाहिए। इसमें साधना के मार्ग में आने वाले मानसिक विकारों, अहंकार और विभिन्न संशयों को दूर करने के व्यावहारिक उपाय भी सुझाए गए हैं ।

'आखिरी कलाम' जायसी की एक और विशिष्ट और महत्वपूर्ण कृति है जो इस्लामी धर्मशास्त्र के 'प्रलय' (कयामत) और 'अंतिम न्याय' के सिद्धांतों को उच्च कोटि का काव्यात्मक रूप प्रदान करती है। इसकी रचना मुगल सम्राट बाबर के शासनकाल (लगभग 1529 ईस्वी या 936 हिजरी) के दौरान हुई थी । जायसी ने इस ग्रंथ में पारंपरिक 'मसनवी' शैली को अपनाया है और ईश्वरीय स्तुति के साथ-साथ बाबर का एक न्यायप्रिय और प्रतापी शासक के रूप में गुणगान भी किया है । 'आखिरी कलाम' में कयामत के उस दिन का जो अत्यंत सजीव, रोमांचकारी और भय उत्पन्न करने वाला वर्णन किया गया है वह मनुष्य को उसके नैतिक कर्तव्यों और कर्मों के प्रति सचेत करने का कार्य करता है। इसमें भूकंप और सूर्यग्रहण जैसी प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वरीय न्याय और प्रलय के आगमन के संकेतों के रूप में प्रस्तुत किया गया है । जहाँ 'पद्मावत' प्रेम की एक मधुर और सरस साधना है वहीं 'आखिरी कलाम' भक्ति, आध्यात्मिक उत्तरदायित्व और ईश्वरीय न्याय के प्रति सम्मानजनक भय का एक अद्‌भुत संतुलन प्रस्तुत करता है। ये ग्रंथ जायसी के विराट और बहुआयामी आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अनिवार्य अंग हैं।

जायसी के काव्य की एक असाधारण और सबसे प्रभावशाली विशेषता उनकी भाषा का चयन और उसका प्रयोग है। उन्होंने 'ठेठ अवधी' को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जो उनके समय के ग्रामीण भारतीय जनजीवन और आम जनता की अत्यंत जीवंत और सहज भाषा थी । उनकी यह भाषा गोस्वामी तुलसीदास की संस्कृतनिष्ठ, परिष्कृत और शास्त्रीय अवधी से सर्वथा भिन्न और मौलिक है इसमें लोक जीवन की सहजता, मिट्टी की सोंधी सुगंध और ग्रामीण मुहावरों की छाप पूरी तरह रची-बसी है । जायसी ने इस सरल 'लोकभाषा' के माध्यम से अत्यंत जटिल, गूढ़ और कठिन सूफी दार्शनिक सत्यों को भी बड़ी सरलता, मिठास और प्रभाव के साथ जन-जन तक संप्रेषित कर दिया। उनके काव्य में भाषा का प्रवाह इतना स्वाभाविक और अबाध है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे अवधी भाषा स्वयं को कविता के सांचे में ढाल रही हो ।

जायसी की काव्य कला और भाषाई सामर्थ्य के विषय में विद्वानों का मत अत्यंत महत्वपूर्ण है कि कबीर ने जहाँ भाषा को अपने क्रांतिकारी विचारों के अनुरूप मोड़ने या कभी-कभी तोड़ने का प्रयास किया। वहीं जायसी के कोमल हाथों में पहुँचकर भाषा स्वयं अत्यंत लचीली और काव्यात्मक होकर बहने लगी । उनकी शैली में अलंकारों का कोई कृत्रिम या अनावश्यक बोझ नहीं दिखाई देता बल्कि उनकी उपमाएं और रूपक सीधे भारतीय प्रकृति और ग्रामीण लोक जीवन के आँगन से सहज ही उठाए गए हैं। वे 'पद्मिनी' स्त्रियों के दिव्य सौंदर्य का वर्णन करते समय उनकी तुलना प्रकृति के सबसे सुंदर और पवित्र तत्वों जैसे पूर्ण चंद्रमा, खिलता हुआ कमल, चपल मृग और गर्वित सिंहनी—से करते हैं जिससे उनके संपूर्ण काव्य में एक अद्भुत प्रकार की 'चित्रोपमता' आ जाती है । जायसी ने समासोक्ति और अन्योक्ति अलंकारों का जो सफल, सटीक और अत्यंत प्रभावी प्रयोग किया वह संपूर्ण हिंदी साहित्य के इतिहास में विरल और अनुकरणीय है।

जायसी के काव्य में प्रयुक्त छंद दोहा और चौपाई उनके गहरे आध्यात्मिक और विरही भावों को वहन करने के लिए सबसे उपयुक्त और सशक्त माध्यम सिद्ध हुए। उन्होंने 'कड़वक' शैली का कुशलता से प्रयोग किया जिसमें सात चौपाइयों के बाद एक प्रभावकारी दोहा आता है । उनकी भाषा की इसी सरलता, सहजता और स्वाभाविक मधुरता के कारण उनके कठिन सूफी विचार और दर्शन जनमानस के हृदय तक सुगमता से पहुँच सके और हिंदू-मुस्लिम दोनों समुदायों में एक समान रूप से लोकप्रिय हुए । जायसी ने अवधी के ग्रामीण शब्दों को जिस प्रकार काव्य के 'रस' और 'भाव' में डुबोकर प्रस्तुत किया उसने न केवल उस भाषा को समृद्ध किया बल्कि हिंदी साहित्य को एक विशिष्ट और नई पहचान भी प्रदान की। उनकी कविता यह निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है कि महान और कालजयी विचारों की अभिव्यक्ति के लिए क्लिष्ट या कठिन भाषा की नहीं, हृदय की पवित्र सच्चाई और सरल, सहज अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है।

मलिक मोहम्मद जायसी केवल एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक या रहस्यवादी कवि ही नहीं थे। वे भारतीय लोक जीवन के बहुत बड़े पारखी और मर्मज्ञ भी थे। उनके संपूर्ण काव्य में सोलहवीं शताब्दी के भारतीय समाज का एक अत्यंत व्यापक, सजीव और विस्तृत चित्र उभरकर सामने आता है। वे लोक जीवन के विविध और सूक्ष्म पक्षों जैसे विवाह के जटिल रीति-रिवाजों, उत्सवों, त्यौहारों, भोजन की विविध शैलियों, युद्ध के मैदानों की विभीषिका और सामाजिक मान्यताओं का अत्यंत सूक्ष्मता और रोचकता के साथ चित्रण करते हैं । 'पद्मावत' में चाहे वह मानसरोवर के तट पर सखियों के जल-क्रीड़ा का आह्लादकारी वर्णन हो या रत्नसेन की बारात की धूमधाम, जायसी हर मोड़ पर भारतीय लोक चेतना और यहाँ की परंपराओं के साथ पूरी तरह एकाकार नजर आते हैं ।

सांस्कृतिक समन्वय की गौरवशाली दृष्टि से जायसी का योगदान भारतीय इतिहास और साहित्य के लिए एक मील का पत्थर माना जाता है। उन्होंने एक हिंदू लोक-कथा (चित्तौड़ और सिंहलद्वीप की प्राचीन कहानी) को आधार बनाकर उसमें सूफी दर्शन के उच्चतम सिद्धांतों को बड़ी कुशलता से पिरोया, जिससे एक ऐसी समन्वित संस्कृति का बीजारोपण हुआ जो दोनों समुदायों के लिए समान रूप से आदरणीय और गौरवशाली थी । उनके काव्य में हिंदू देवी-देवताओं, भारत के पवित्र तीर्थों और विभिन्न संप्रदायों के योगियों का अत्यंत सम्मान और आदर के साथ उल्लेख मिलता है। वे पद्मावत के माध्यम से यह महान संदेश प्रसारित करते हैं कि सत्य की खोज में निकले सभी साधक—चाहे वे राम के उपासक हों, संन्यासी हों, नाथपंथी योगी हों, जैन मुनि हों या शक्ति के उपासक हों—वे सभी अंततः एक ही परम सत्ता के विभिन्न रूपों और मार्गों की आराधना कर रहे हैं ।

जायसी ने उस दौर की सांप्रदायिक दूरियों और वैमनस्य को 'प्रेम' की कोमलता और संवेदनशीलता से समाप्त करने का जो ऐतिहासिक प्रयास किया उसने भारतीय राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक एकता की आधारशिला को अत्यंत सुदृढ़ बनाया । उनकी कविता ने धार्मिक कट्टरता और संकीर्णता की दीवारों को गिराकर 'हृदय की एकता' पर बल दिया, जो आज के वैश्विक समाज में भी उतनी ही प्रासंगिक और अनिवार्य है। विद्वानों और आलोचकों का यह सुदृढ़ मत है कि जायसी और उनके जैसे अन्य उदार सूफी कवियों ने धार्मिक संघर्ष की स्थिति को सांस्कृतिक सहयोग और संवाद में बदलकर हिंदी साहित्य को गुणात्मक रूप से समृद्ध किया । उनकी रचनाओं ने यह प्रमाणित कर दिया कि कला

और उच्च साहित्य के माध्यम से विपरीत विचारधाराओं के बीच भी एक सार्थक और प्रेमपूर्ण संवाद की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है।

जायसी की काव्य शक्ति और उनकी आध्यात्मिक गहराई को उनके द्वारा रचित विशिष्ट छंदों और पंक्तियों के माध्यम से सर्वोत्तम रूप में समझा जा सकता है, जहाँ वे अपने गूढ़ अनुभवों को शब्दों में पिरोते हैं। उनके काव्य का प्रत्येक दोहा और चौपाई अपने भीतर अर्थों का एक गहरा सागर समेटे हुए है। उदाहरण के लिए, जब वे अपनी शारीरिक कुरूपता और अपनी सूक्ष्म आध्यात्मिक दृष्टि के बीच एक अद्भुत संतुलन बिठाते हैं, तो वे चंद्रमा का एक अत्यंत सुंदर और तार्किक रूपक प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि विधाता ने चंद्रमा को इस जगत में अवतरित किया, तो उसे कलंक भी दिया, किंतु उसी के साथ उसे संपूर्ण विश्व को आलोकित करने का उजाला भी प्रदान किया । इन पंक्तियों के माध्यम से वे यह समझाना चाहते हैं कि जिस प्रकार चंद्रमा अपने दाग के बावजूद अपनी शीतलता और प्रकाश से वंदनीय है उसी प्रकार जायसी के शरीर में भले ही भौतिक दोष हों, किंतु उनकी काव्य प्रतिभा और ज्ञान संपूर्ण विश्व को आध्यात्मिक रोशनी प्रदान कर रहे हैं। उनका यह आत्मविश्वास उनकी साधना की परिपक्वता का ही परिचायक है।

इसी प्रकार, सृष्टि की उत्पत्ति और परम सत्ता के स्वरूप के संदर्भ में उनके दार्शनिक विचार 'अखरावट' में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुए हैं, जहाँ वे कहते हैं कि जब न आकाश था, न पृथ्वी, न चंद्रमा और न ही सूर्य—तब उस परम अंधकारपूर्ण शून्य में विधाता ने सबसे पहले 'मुहम्मद के नूर' को प्रतिष्ठित किया । यह छंद उस आदिम शून्य की स्थिति का वर्णन करता है जहाँ केवल एक परम प्रकाश की उपस्थिति थी। यहाँ जायसी ने भारतीय 'शून्य' और सूफी 'नूर' के सिद्धांतों का जो समन्वय किया है वह दर्शनीय है। जायसी के काव्य की एक और अनुपम विशेषता उनकी 'रहस्यदर्शी' दृष्टि है जो प्रकृति की प्रत्येक हलचल में ईश्वरीय कृपा और सौंदर्य का दर्शन करती है। उनके बारे में प्रसिद्ध है कि "जेहि मुख देखा तेहिं हँसा, सुना तो आये आँसू" । अर्थात, उनके बाह्य मुख को देखकर भले ही लोगों को हँसी आई हो, किंतु जैसे ही उन्होंने जायसी की वाणी और काव्य को सुना, उनकी आँखों में ईश्वरीय प्रेम और करुणा के अश्रु उमड़ आए।

जायसी ने रत्नसेन और पद्मावती की कथा के माध्यम से जिस अनुपम 'प्रेम-रस' की सृष्टि की है उसके बारे में वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि यद्यपि उनसे पूर्व अनेक महान और यशस्वी कवि हुए हैं, परंतु इस दिव्य और रसपूर्ण प्रेम कथा को एक व्यवस्थित महाकाव्य का रूप देने का गौरव उन्हें ही प्राप्त हुआ । वे विरही साधक और परमात्मा के बीच के संबंध को मधुमक्खी और फूल के उदाहरण से स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जो हृदय से जुड़े हैं वे दूर होकर भी निकट हैं और जो प्रेम के बिना पास हैं वे वास्तव में बहुत दूर हैं । जायसी के ये अनमोल उद्धरण और छंद इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि उनकी कविता केवल शब्दों का समूह या कोरी कल्पना नहीं है अपितु यह अनुभूतियों का एक ऐसा महासागर है जिसमें गोता लगाने वाला हर व्यक्ति प्रेम के दिव्य रंग में रंग जाता है।

मलिक मोहम्मद जायसी के विस्तृत काव्य का गहन विश्लेषण इस सत्य को पूरी तरह स्पष्ट करता है कि उनका रहस्यवाद काल्पनिक नहीं था वह मानवीय संवेदनाओं, लोक जीवन और हृदय की सच्चाई के धरातल पर टिका हुआ एक अत्यंत व्यावहारिक और प्रभावशाली जीवन दर्शन था। उन्होंने 'प्रेम' को एक ऐसी वैश्विक और शक्तिशाली भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जो संसार की समस्त जटिलताओं, सांप्रदायिक विद्वेषों और मानवीय दुखों का स्थायी समाधान करने में पूर्णतः सक्षम है। उनके अलौकिक प्रेम और रहस्यवाद का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक योगदान यह है कि उन्होंने आध्यात्मिकता को केवल शुष्क ज्ञान, नीरस चर्चाओं और केवल विद्वानों तक सीमित होने से बचाया और उसे 'रस', 'भाव', 'संगीत' और 'मिठास' से परिपूर्ण कर जन-साधारण के जीवन का एक सहज हिस्सा बना दिया ।

जायसी का दर्शन हमें यह शिक्षा प्रदान करता है कि ईश्वरीय प्रकाश और शांति को प्राप्त करने के लिए इस दृश्यमान संसार का पूर्ण परित्याग करना या इससे घृणा करना अनिवार्य नहीं है। इस संसार के सौंदर्य, यहाँ के संबंधों और लोक जीवन की गतिविधियों में ही उस 'परम प्रियतम' की दिव्य झलक देखना ही वास्तविक है। विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, संप्रदायों और भाषाओं के बीच संवाद, सद्भाव और अखंड एकता का सबसे सशक्त और स्थायी सेतु केवल 'प्रेम' ही हो

सकता है। नागमती के विरह की दारुण तड़प से लेकर पद्मावती के साथ होने वाले उस दिव्य आध्यात्मिक मिलन तक की रत्नसेन की यात्रा, वस्तुतः संसार के प्रत्येक मनुष्य की अपनी आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा का ही एक सजीव प्रतिबिंब है ।

जायसी की भाषा की अद्भुत सरलता उनके प्रतीकों की गहरी दार्शनिक पकड़ और उनके विचारों की उदार व्यापकता उन्हें न केवल मध्यकाल का बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य का एक अनमोल और अमूल्य रत्न बनाती है। उन्होंने जिस 'हृदय की एकता' और 'प्रेम के साम्राज्य' का स्वप्न अपनी कविताओं में देखा था, वह आज के विभाजित और संघर्षरत समाज के लिए एक शीतल मरहम के समान है। उनकी महान साहित्यिक विरासत हमें एक ऐसे समाज के निर्माण की प्रेरणा देती है जहाँ मनुष्य की पहचान उसके बाह्य आडंबरों, धर्म या जाति से नहीं, बल्कि उसके हृदय की शुद्धता, मानवीय करुणा और ईश्वर के प्रति उसके अगाध और निश्छल प्रेम से की जाए। जायसी की कविता आज भी मानसरोवर के उस अत्यंत निर्मल और पवित्र जल के समान है जिसमें जो भी व्यक्ति श्रद्धा और प्रेम के साथ डुबकी लगाता है वह सदैव के लिए प्रेम के उस दिव्य रंग में रंग जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य रामचंद्र तिवारी- मलिक मोहम्मद जायसी डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया ई-पीज़ी पाठशाला-
2. सूफी काव्यधारा और मलिक मोहम्मद जायसी हिंदी अध्ययन सामग्री
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल- जायसी ग्रंथावली, विनय प्रकाशन कानपुर द्वितीय संस्करण पृष्ठ 477
4. डॉ शिव सहाय पाठक- मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल- जायसी का रहस्यवाद जायसी ग्रंथावली (भूमिका)
6. डॉ कमल कुलश्रेष्ठ- हिंदी प्रेमाख्यान काव्य, चौधरी मानसिंह प्रकाशन कचहरी रोड अजमेर
7. पंडित मुंशी राम शर्मा- पद्मावत संशोधित संस्करण
8. डॉ माता प्रसाद गुप्त- जायसी ग्रंथावली भूमिका पृष्ठ 106
9. इग्नू- इकाई-4: जायसी का काव्य मध्यकालीन भारतीय कविता-1 (BHDC-105)